RESEARCH REVIEW JOURNALS
RCTRM-2018
OCT- 2018
Special Issue

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

जनजीवन पर संगीत का प्रभाव

शाईना

एम.फिल. विद्यार्थी, संगीत विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला।

संगीत भारतवर्ष की प्राचीन कलाओं में सर्वोत्तम कला मानी जाती है। देवताओं, ऋषिओं और मुनियों ने संगीत साधना करके परमानन्द की प्राप्ति की है। हमारा इतिहास इसका साक्षी है। यह कला मानव जीवन का बहुत बड़ा आधार है। विश्वकवि रविन्द्रनाथ टैगोर ने इसे सौन्दर्य का साकार एवं सजीव प्रदर्शन कहा है। इस कला के द्वारा सिद्ध लोगों ने मोक्ष प्राप्त किया है। (वैसे प्रत्येक कला मानव को विश्वात्मा का सामीप्य और सुख दिलाती है, किन्तु संगीत परमात्मा को पाने का सीधा रास्ता है।) जीवन स्वयं संगीत है, लय, तालबद्ध स्वर और संगीतमय जीवन ही श्रेष्ठ है। समाज का हर वर्ग संगीत में ओतप्रोत है अर्थात् उससे प्रभावित है। वास्तव में संगीत ही एक ऐसा विषय है जिसके द्वारा समाज का प्रत्येक प्राणी मोहित होता है और हृदय शुद्ध करके इसको प्राप्त करता है। (संगीत की स्वर लहरी से मनुष्य का संपूर्ण जीवन आनंदमयी हो जाता है। अर्थात् इसके स्वरों ने ही मानव जीवन को सुसज्जित किया है, उसमें आनंद के रंगों का समावेश किया है। संगीत मानव समाज की कलात्मक उपलब्धियों एवं सांगीतिक परम्पराओं का मूर्तिमान प्रतीक रहा है। यह आदिकाल से ही जनजीवन में आत्मिक उल्लास और सुखानुभूति की ललित अभिव्यक्ति का मधुरतम माध्यम रहा है। मानव के अन्तर्मन का बहिः प्रकाशन जितना संगीत के माध्यम से होता है, उतना किसी अन्य कला द्वारा संभव नहीं है।) जिस तरह बाहरी संवेदनाओं को मन तक पहुँचाने का कार्य शरीर के द्वारा होता है उसी तरह शरीर व मन का भी अभिन्न संबंध है और संगीत मन व शरीर दोनों को ही प्रभावित करता है। हमारे सामाजिक जीवन में संगीत पग–पग पर इसी कारण हमारा साथी रहा है कि वह हमारे आनन्द में प्रफुल्लित होता है और दुख में भी साथ रहता है। मनुष्य के जीवन में संगीत का विशेष महत्व रहा है। जीवन के प्रत्येक रंग को अपने रंग में रंगने वाली यह कला धन्य है। हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक मुंशी प्रेमचंद ने कहा है कि 'जब मनुष्य का हृदय दुःख से परिपूर्ण हो जाता है जब उसको कहीं भी आश्रय नहीं मिलता है और जब रूदन और क्रन्दन उसका साथ नहीं देते तब वह संगीत के चरणों में आ गिरता है।'[1]

डॉ. बर्ने ने कहा है कि 'संगीत की प्राचीनता को देखते हुए यह ज्ञात होता है कि मनुष्य और संगीत का जन्म साथ–साथ हुआ हो।'[2] अतः यह तो मानव के लिए एक स्वाभाविक कला है। भारतीय उपनिषदों में ऐसा कहा गया है

'साहित्य संगीत कलाविहीनः
साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः।।'

अर्थात् साहित्य संगीत और कला के बिना, मनुष्य बिना पूंछ और सींग वाले पशु के समान है। अतः मानव के नैतिक, संवेगात्मक और आध्यात्मिक विकास के लिए संगीत एक आधारभूत विषय है। इसके बिना हम मनुष्य जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते। पं. शारंगदेव ने अपने ग्रंथ 'संगीत रत्नाकर' में लिखा है कि 'जिस बच्चे को अभी विषयों का ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ और जो केवल पालने में ही झूलना जानता है वह भी संगीत के स्वरों को सुनकर अपना रोना बंद कर देता है।'[3]

बच्चा जब सोता है तब माँ उसे लोरी गाकर सुलाती है। खिलौने से उसे खिलाती है। इन क्रियाओं से बच्चे को खुश करती है। अतः इससे स्पष्ट होता है कि एक बालक जिसको किसी चीज़ का बोध नहीं होता वह भी संगीत के स्वरों से जुड़ा होता है।

श्रीमती मनोरमा शर्मा ने इसी संदर्भ में अपने शोध प्रबंध में लिखा है: –

> Effect of music on humanbeings has been studied on aspects like physiological changes, psychological behavioural changes, physical changes, mental therapy and general achievement etc.

अर्थात् मानव पर संगीत के प्रभाव का अध्ययन विभिन्न दृष्टिकोणों से किया जा सकता है, "मानसिक व व्यवहारिक परिवर्तन, मानसिक उपचार पद्धति तथा साधारण उपलब्धियाँ इत्यादि।"[4] किन्नर जाति जिसको सामाजिक दृष्टि से हीन भावना से देखा जाता है, उनका जीविकोपार्जन का माध्यम भी संगीत ही है। हीनता की दृष्टि से देखे जाने के कारण इन्हें कोई भी प्रतिष्ठित व्यवसाय की अनुमति नहीं होती है। इसलिए समाज में प्रचलित विवाह उत्सव हो या जन्मोत्सव या फिर कोई त्यौहार हो, सभी पर यह किन्नर लोग सामूहिक रूप से एकत्रित होकर लोगों का गीत, संगीत व नृत्य के माध्यम से मनोरंजन करते हैं व शुभकामनाएँ देते हैं।

संगीत के द्वारा मन व बुद्धि को संतुलित किया जा सकता है। संगीत ही एकमात्र ऐसी कला है जो मनुष्य को दानव से मानव बनाने की प्रेरणा देती है। जिस समय मनुष्य मानसिक व शारीरिक रूप से थका हारा महसूस करता है तब संगीत ही उसके मन को शान्त तथा उसकी थकान दूर करता है।

संगीत तो मनुष्य जीवन के साथ जुड़ा हुआ एक अनूठा उपकारक तत्त्व है जो समाज संगठन में तथा समष्टिकरण में अपना विशेष महत्व रखता है। अपने मन के भावों को रोचक तथा मनोरंजनपूर्वक प्रदर्शित करने के लिए संगीत कला को ही माध्यम बनाया जाता है। मनुष्य परिस्थितियों के अनुरूप ही अपने भावों को अभिव्यक्त करता है, जिसका आधार आंतरिक अनुभूति है। संगीत और मनुष्य तो पग–पग के साथी हैं। संगीत के स्वर चाहें कोई ग्रामीण हो या शहरी, सभी के लिए एक समान हैं। मनुष्य आनंद की भाव मुद्रा में आकर गुनगुनाने लगता है। स्नान करते समय भी उसके कंठ से ज़ोरदार आवाज़ निकल ही आती है। अतः कहा जा सकता है कि संगीत और मनुष्य जीवन का निकट का संबंध है। यह तो वह कला है जो स्वयं में निहित मधुरता व सौन्दर्यात्मकता द्वारा ही अनेक असाध्य रोगों के उपचार में कारगर सिद्ध हो गई है। संगीत की कोमल मधुर ध्वनियाँ व तरंगें वैज्ञानिक सिद्ध हो चुकी हैं। मनुष्य ही क्या जीव–जन्तु, पशु–पक्षी, कीट–पतंगों के अतिरिक्त हिन्दू मान्यता में पूज्य देवी–देवता भी इस कला से प्रभावित हुए हैं।

पं. शारंगदेव ने संगीत रत्नाकर में लिखा है –

"गीतेन प्रीयते देव सर्वज्ञः पार्वती पतिः।
गोपी पश्निन्तोऽपि वंशध्वनिवंशगतः।।
सामगी तिरंगे ब्रह्मा वीणाऽसक्ता सरस्वती।
किमन्ये यक्षगन्धर्वदेव दानव मानवाः।।"[5]

अर्थात् गीत द्वारा पार्वती, सर्वज्ञ देव भगवान शंकर प्रसन्न होते

हैं। भगवान कृष्ण वंशी की ध्वनि के अधीन है। भगवान ब्रह्मा सामगीत द्वारा प्रसन्न होते हैं। देवी सरस्वती वीणा पर बैठी हैं और इसके अतिरिक्त यक्ष, गन्धर्व, देव, दानव तथा मनुष्य आदि सभी संगीत के श्रवण पर आनंद विभोर हो उठते हैं।''

तात्पर्य यह है कि संगीत किसी भी रूप में हो मन को आनन्दित करता ही है। इसकी मधुर स्वर लहरियों के माध्यम से एक कलाकार अपनी कल्पना की स्वतन्त्र उड़ान के द्वारा ही संगीत सरिता में डूब जाता है। जो अपनी स्वर लहरियों के द्वारा धरती के कोने–कोने में जाकर संगीत की वर्षा से संगीत प्रेमियों को संतुष्ट करता है। संगीत हमें मानवता का पाठ पढ़ाता है। संगीत की महानता को स्वीकार करते हुए महान कवि एवं नाटककार शेक्सपीयर ने भी कहा है कि 'जिस मनुष्य में गायन के प्रति सोच नहीं, जो इसके मधुर स्वरों से मोहित नहीं होता वह पतित, विश्वासघाती एवं आत्मद्रोही है और उसका हृदय अन्धकारमय रात्रि से भी अधिक भयंकर है।''[6]

संगीत मनुष्य, पेड़–पौधों, जीव–जन्तु, सभी को अपनी ओर आकर्षित करता है। संगीत श्रवण के द्वारा मानव व जीव जन्तुओं के स्वास्थ्य की रक्षा की जा सकती है। जिस तरह मनुष्य आपस में बातचीत कर अपना सुख–दुःख बाँटते हैं, इसी तरह पशु–पक्षी भी एक दूसरे से ध्वनि संकेतों के द्वारा अपना दुःख दर्द बाँटते हैं। डॉ. स्वतन्त्र शर्मा के अनुसार ''पशु–पक्षियों व प्रकृति की विभिन्न ध्वनियों को सुनकर ही मनुष्य को गाने की प्रेरणा मिली होगी।''[7]

हिन्दू जाति का तो संगीत के साथ मानो कोई संबंध ही जुड़ा हुआ है। यदि किसी का जन्म हुआ तो संगीत, विवाह हो तो संगीत, मरना हो तो संगीत और कार्य की सफलता प्राप्ति पर संगीत। मानव को जन्म लेने से पहले ही संगीत के संस्कार प्राप्त हो जाते हैं। माता के गर्भ धारण के पूर्व ही दादी, नानी, भाई–बन्धुओं के द्वारा इस संबंध में शुभकामना की जाती है। आशीर्वाद के रूप में गीत गुनगुनाये जाते हैं। गर्भावस्था में घर में संगीत समारोह, कीर्तन और व्यक्तिगत गीत गाए जाते हैं।

संगीत में वह शक्ति है कि वह अपने मधुर स्वरों से दीप जला सकती है, घटा से रस बरसा सकती है। कहा जाता है कि एक बार तानसेन ने अकबर के दरबार में राग दीपक सुनाया जिसकी गर्मी इतनी बढ़ गई कि सभी श्रोतागण तो भाग गए और तानसेन गर्मी से जलने लगे। उनकी जलन शान्त करने के लिए उनकी पुत्री ने राग मेघ सुनाया। इस प्रकार संगीत में हर तरह के भाव होते हैं जिनसे सुख, दुःख, गर्मी, शान्ति आदि का भाव उत्पन्न किया जा सकता है।

प्रकृति के कण–कण में संगीत है। वृक्षों की पत्तियाँ जब तेज़ हवा के चलने के कारण हिलती हैं तो उनमें भी एक प्रकार की सरसराहट सी सुनाई देती है। ध्यान से सुनने पर उसमें भी संगीत ही सुनाई देगा। जानवरों में भी संगीत के प्रति रूचि होती है। गाय संगीत के स्वर को पहचानने में बहुत निपुण होती है। वह घण्टी का स्वर समझने में कभी नहीं चूकती। पहाड़ी चरगाहों में जानवरों के झुण्ड के झुण्ड इन्हीं घण्टियों के सहारे अपने–अपने गोल का पता लगाते हैं। मदारी की बीन पर भयंकर विषैला सर्प फन फटकाकर थिरक उठता है। बहेलिये की वीणा पर मुग्ध होकर मग्न उसके जाल में फंस जाता है।

हम संगीत से एक दूसरे के अन्दर राष्ट्र प्रेम जागृत कर सकते हैं। डॉ. राजिन्द्र प्रसाद ने कहा है – ''संगीत जीवन की एक ऐसी वस्तु है कि जो क्षण भर के लिए एक विनाशकारी चंगुल से छूटकर अमरता को प्रदान करती है।'' संगीत के बिना हमारा जीवन रसहीन हो जाएगा। हम अपने जीवन की हर खुशी को संगीत द्वारा ही प्रदर्शित कर सकते हैं। यह कला मनुष्य के ब्रह्म जीवन से ही सम्बन्ध नहीं रखती बल्कि वह हृदय के अंदर छिपी भावना को भी उज्जवल करती है। भगवान कृष्ण ने स्वयं गीता द्वारा महावीर अर्जुन को बताया है कि 'हे अर्जुन न मैं वैकुण्ठ में रहता हूँ, न मैं योगियों के हृदय में वास करता हूँ, मेरा निवास तो वहीं होता है, जहाँ मुझे मेरे भक्त गायन द्वारा याद करते हैं।

संगीत के द्वारा हम अपने मन के भावों का शमन ही नहीं करते हैं बल्कि उन्हें उत्तेजित करने की भरपूर शक्ति रखते हैं। दुदुम्भी, भेरी, नक्कारे व त्रिशूल जैसे वाद्यों का उपयोग सैनिकों को जोश दिलाने के लिए किया जाता है। अतः संगीत प्रत्येक व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करता है। एक अंग्रेजी कवि ने सही कहा है कि 'संगीत में तो वह जादू है जो जंगली पशुओं को शान्त कर सकता है, पत्थरों को पिघला सकता है और गाँठदार ओक के वृक्ष को झुका सकता है।''[8]

संगीतज्ञों का यह विश्वास है कि संगीत श्रवण के प्रभाव से वे जीवधारियों की मनो स्थिति में इच्छानुसार परिवर्तन करने में समर्थ हो सकते हैं। संगीत के द्वारा हिंसक पशुओं को भी शान्त किया जा सकता है। पंडित ओंकार नाथ ठाकुर ने संगीत के इसी मानसिक शान्ति देने वाले प्रभाव को जानने के लिए एक खूंखार शेर पर प्रयोग किया था एवं उन्होंने यह जाना कि संगीत श्रवण के द्वारा हिंसक प्राणियों को केवल आकर्षित ही नहीं किया जा सकता अपितु उनकी हिंसक प्रवृत्ति एवं गुस्से को भी शान्त किया जा सकता है।

संगीत के प्रति पशु–पक्षियों का रूझान झलकता है। ''मेहर के उ. अलाउदीन खाँ साहब एक बार अपने मकान पर जब सरोद लेकर राग की अवतारणा करने लगे तो एक काला सर्प उनके निकट आ गया। वह अपनी हृदय स्थली भावनाओं के व्यक्तिकरण में मस्त थे। जब उन्होंने सरोद वादन समाप्त किया तो सर्प शांति से अपने स्थान को लौट गया। दूसरे दिन भी यही घटना कुछ दर्शकों के समक्ष घटित हुई।''[9]

दक्षिण भारत के तिरुपति के प्रसिद्ध वेंकटेश्वर देवालय की गोशाला में सुबह के समय रेडियो पर संगीत बजाया जाता है साथ ही गायन वादन भी चलता रहता है। वहाँ के प्रबन्धकों का कहना है कि संगीत की मधुर ध्वनियो को सुनकर गाय ' जो गायें संगीत नहीं सुनती थी' उनकी तुलना में अपेक्षाकृत अधिक दूध देती थी और जब संगीत बंद करके देखा गया तब दूध भी घट गया। यह घटना सत्य है कि एक बार सूखा पड़ने के कारण गायों का हरा चारा बंद करना पड़ा। दुधारू गायें भी सूखे चारे पर गुजारा करती थी परंतु फिर भी दूध उत्पादन कम नहीं हुआ। ऐसा देखा गया कि संगीत सुनने वाली गायें उतना ही दूध दे रही थी जितना कि हरा चारा खाने पर दिया करती थी।''[10]

सामान्य रूप से यह देखा गया है कि पालतू जानवरों के साथ कोई न कोई वाद्य यंत्र बाँध दिया जाता है। गाय व बैल के गले में घण्टी और घोड़े व कुत्ते के साथ घुंघरू आदि। साधारण तौर पर यह देखा गया है कि घोड़े के पैरों में या गले में घुंघरू बाँधें जाते हैं क्योंकि घोड़ा गाड़ी चलते समय घोड़े के पैरों की चाप के स्वर घुंघरू के स्वर के साथ लयबद्ध होकर चलते हैं। यह संगीत के स्वरों का ही प्रभाव है कि घोड़ा लयबद्ध होकर अपनी गति को बढ़ाता हुआ चलता है। यदि हम अपने इतिहास पर दृष्टि डालें तो ऐसी अनेक घटनाएँ प्राप्त हो जायेंगी। संगीत सम्राट तानसेन के गायन के चमत्कार से मनुष्य तो क्या पशु–पक्षी भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहते थे। इस समय की तानसेन व बैजू बावरा के बीच हुई गायन प्रतियोगिता बहुत प्रसिद्ध है। इस गायन प्रतियोगिता का वर्णन तो विद्वानों ने अपनी सांगीतिक पुस्तकों में भी किया है। जिसके अनुसार एक बार तानसेन व बैजू के बीच गायन प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसमें तानसेन के गायन से आकर्षित होकर कई मृग वन से आ गए तथा गायन सुनने लगे। जिसमें से एक मृग के गले में तानसेन ने फूलों की माला डाल दी। गायन खत्म होते ही सभी मृग वन में वापस चले गए। जब बैजू के गाने की बारी आई तब उन्होंने अपने गायन में केवल एक ही मृग को वन से बुला लिया जिसके गले में माला थी और माला निकालकर वापस तानसेन को दे दी।''[11]

आजकल तो रोगी मनुष्य का संगीत द्वारा उपचार किया जाता है, पौधों को बड़ा किया जाता है एवं मोक्ष भी प्राप्त किया जा सकता है।

स्वयं महात्मा गांधी जी को संगीत से विशेष प्यार था। इसी कारण तो उन्होंने ''रघुपति राघव राजाराम'' की ध्वनि तथा ''वैष्णव जन तो तैने कहिये'' की राग में स्थापना की। संगीत का गान करते समय प्रसन्नता और भक्ति का संचार होता है। संगीत मानवीय धर्मो का नाशक नहीं पोषक है। शारीरिक और मानसिक धर्मो की रक्षा जितनी संगीत से होती हैं उतनी अन्य साधनों से नहीं होती। संगीत कला से रक्त का संचालन संकलित और नियमित होता है। प्रातः काल गायन करने से शरीर और मन निरोग रहते हैं। संगीत से स्वास्थ्य और दीर्घायु प्राप्त होती है। इस कला में वशीभूत करने की महान शक्ति तथा अद्भुत जादू है। इसका उदाहरण मुगल कालीन निम्नलिखित घटना से ज्ञात हो जाएगा। बादशाह अकबर कला प्रेमी ही नहीं कला का पारखी भी था। संगीत सम्राट तानसेन ने इसी दरबार में हिरणों को संगीत द्वारा वशीभूत कर वास्तविक जादू सा उपस्थित किया था, आज भी वह जादू है। स्वर्गीय सम्राट तानसेन की समाधी के निकट जाने पर अनुभव होता है कि मानव तानसेन की पुकार कह रही है कि संगीत में जादू है, प्रभाव है तथा शक्ति है। मानव जीवन में संगीत की बहुत आवश्यकता है। अंग्रेजी लेखक शेक्सपियर ने भी कहा है कि वह मनुष्य जिसको संगीत से प्रेम नहीं है उनका जीवन अंधकारमयी रात्रि के समान भयानक है। स्वयं भगवान ने भी नारद जी के पूछने पर गीता में बताया –

नाहं वसामि बैकुन्ठे योगिनां हृदयं च,
मद्भक्ताः यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारदः।।

अर्थात् न तो मैं बैकुन्ठ में रहता हूँ और न ऋषि–मुनियों के हृदय में परन्तु जहाँ मेरे भक्त संगीत द्वारा मेरा नाम उच्चारण करते हैं वहाँ प्रत्यक्ष रूप से रहता हूँ।

निष्कर्षः

जीवन के किसी भी क्षण में हम संगीत को नहीं छोड़ सकते। उपरोक्त दिये गए विवरण से हम यही निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि संगीत जन–जीवन के प्रत्येक पहलू को आनन्दित तथा रोचक बनाता है। यह मानवीय भावनाओं को जागृत करने का सर्वश्रेष्ठ साधन है। इस कला में वह शक्ति है जिसके प्रयोग से मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है। संगीत से ही मनुष्य में सौन्दर्य के प्रति संवेदनशीलता का विकास होता है, जिससे उसमें सांस्कृतिक परिष्कार आता है।

अन्त में भर्तृहरि के निम्न शब्द स्मरण आ जाते हैं – जिसकी हृदय तन्त्री के तार संगीत लहरियों से अलंकृत नहीं हुए, जिसका मन रूपी कुमुद संगीत चंद्रिका में विकसित नहीं हुआ, वह मनुष्य अभागा है। ऐसे मनुष्य तृण न खाते हुए और पूँछ तथा सींग न होते हुए भी पशु हैं।

''जो भरा नहीं है भावों से,
जिसमें बहती रस धारा नहीं।
वह हृदय नहीं पत्थर है,
जिसमें संगीत से प्यार नहीं।''

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

1. संगीत निबंधावली, ले. – लक्ष्मीनारायण गर्ग, पृ. – 15
2. कला और संगीत शिक्षा, ले. – श्रीमती राजकुमारी शर्मा, डा. आर.पी. शर्मा, पृ. – 144
3. संगीत चिकित्सा, ले. – डॉ. सतीश वर्मा, पृ. – 112
4. संगीत चिकित्सा, ले. – डॉ. सतीश वर्मा, पृ. – 113
5. संगीत रत्नाकर स्वराध्याय प्रथम भाग, ले. – शारंगदेव, पृ. – 16
6. थीसिस से उद्घृत, पृ. – 325
7. संगीत चिकित्सा, ले. – डॉ. सतीश वर्मा, पृ. – 226
8. संगीत के स्वर करते हैं इलाज, ले. – डॉ. सुरेन्द्र वर्मा जनसत्ता 6 जनवरी, 1993, पृ. – 5
9. संगीत निबन्धावली
10. संगीत चिकित्सा, ले. – डॉ. सतीश वर्मा, पृ. – 251
11. संगीत चिकित्सा, ले. – डॉ. सतीश वर्मा, पृ. – 228, 229